ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 89-91

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

चित्रकूट एवं बांदा जिले की गोंड एवं मवासी जनजातियों का एक सर्वेक्षण

श्रीमती इन्द्रकमल कुशवाहा

शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि0वि0–रीवा (म0प्र0) भारत

Received-04.04.2022, Revised-09.04.2022, Accepted-12.04.2022 E-mail: kapildev@gmail.com

सारांशः – *स्वतंत्रता के 75 वर्षों बाद जनजातियों की सामाजिक स्थिति का अवलोकन किया जाये तो ये आज भी कई समस्याओं से जूझ रहे हैं। सर्वेक्षण के दौरान आदिवासी 5वीं से अधिक शिक्षित नही मिला। अधिकांश के पास भूमि नही। चिकित्सा की व्यवस्था नही। आर्थिक आधार नही। ये अपनी परंपरागत विरासत को भूलते जा रहे है। जब ये वनों पर आश्रित थे, वनों एवं प्राकृतिक सम्पतियों पर सरकार का अतिक्रमण नही था। उस समय ये बेहतर थे स्वतंत्र थे। आर्थिक रूप से सम्पन थे। लेकिन आज ये स्वतंत्र भारत के गुलाम का जीवन जी रहे हैं।*

कुंजीभूत शब्द– अवलोकन, आदिवासी, शिक्षित, चिकित्सा की व्यवस्था, आर्थिक आधार, परंपरागत विरासत, प्राकृतिक।

स्वतंत्रता के 75 वर्षों बाद जनजातियों की सामाजिक स्थिति का अवलोकन किया जाये, तो ये आज भी कई समस्याओं से जूझ रहे हैं। इनकी मुख्य समस्या आर्थिक विपन्नता ,मद्यपान की प्रवृत्ति, निम्न शिक्षा स्तर, उत्पीडन, अंधविश्वास एवं जादू–टोना, उत्पीडन। जनजातियों की सभी समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए चित्रकूट एवं बाँदा जिले के दो ग्राम सभाओं कोल्हुआ माफी एवं गोबरी गोवर्धनपुर का निरीक्षण किया गया। दिनांक 3 अप्रैल 2022 को अपने शोध विषय जनजातीय संस्कृति परिवर्तन एवं वर्तमान परिदृश्य के लिए प्राथमिक डाटा संग्रह के उद्देश्य से इन स्थानों का अवलोकन किया गया।

कोल्हुआ माफी ग्राम सभा खम्हरिया अतर्रा से दक्षिण–पूर्व दिशा में 34 किमी. दूरी पर बसा यह ग्राम सभा अपने कलेवर में मनोरम प्राकृतिक सौन्दर्य समेटे हुए है। रास्ते में बानगंगा आश्रम से पूर्व दिशा में एक बस्ती है, जिसमें गोंड जाति के लगभग 40 घर हैं, जिनकी आबादी 270 है। यह (NO MAN ZONE) कम जनसंख्या घनत्व वाला क्षेत्र है। बानगंगा नदी को झूरी नदी भी कहा जाता है। इसके किनारे एक आश्रम है, जो बानगंगा आश्रम के नाम से प्रसिद्ध है। इस नदी का नाम झूरी नदी इसलिए पड़ा कि यह बहुत जल्दी सूख/झुरा जाती है। पौराणिक आख्यान के अनुसार महाभारत काल में पाण्डवों ने अज्ञातवास यहीं बिताया था। अर्जुन ने अपने धनुषबाण से एक नदी निकाली थी, जिसका नाम बानगंगा पड़ गया। रसिन बांध का निर्माण बानगंगा एवं करैली नदी में हुआ है। जिसके जल का उपयोग इस क्षेत्र के कृषि भूमि की सिंचाई के लिए किया जाता है। कोल्हुआ माफी बस्ती की गलियां, रास्तें सभी सीमेन्ट की ईंटों से बने हैं। यहाँ का प्राथमिक स्कूल काफी सन्तुलित है। यह बस्ती मुख्य मार्ग से जुडी हुई है, लेकिन साधन का अभाव है। इस बस्ती के लोग जीविकोंपार्जन हेतु सूरत, मुम्बई, पंजाब आदि जगहों पर पलायन कर चुके हैं, बच्चें, महिलायें एवं बृद्ध गांव में निवास करते हैं। इनके पास भूमि नही है। आय के स्त्रोत के लिए ये लोग जंगली फल, लकड़ी, तेन्दू पत्ता एवं महुआ आदि एकत्र करके बाजार में बेंचते हैं।

"यद्यपि गोंड जातियों का बिस्तार समुचे पूर्वी मध्य प्रदेश से लेकर तमिलनाडु तक था, किन्तु कोयतोर मध्य प्रदेश की सीमा रेखा के बाहर समीपवर्ती प्रदेशों उडीसा और आन्ध्र के कुछ हिस्सों तक सीमित है। दक्षिणी सीमा क्रमशः उत्तर की ओर और खिसकती रही और 1931 तक यह कृष्णा नदी के उत्तरी तल तक पहुंच गयी, मध्य प्रदेश की जनजातियों में संख्या और बिस्तार क्षेत्र की दृष्टि से गोंड़ों का क्रम पहला है। यदि बस्तर के सभी गोंडों (मुडिया, भारिया सहित) को सम्मिलित कर लिया जाय तो इनकी जनसंख्या 15 लाख से अधिक है।"[1]

फुक्स 1960 के अनुसार गोंड़ों का सामाजिक संगठन दो विभिन्न प्रणालियों पर आधारित है। ये प्रणालियाँ क्रमशः कुलगत एवं क्षेत्रीय हैं। गोंडों ने मूलभूत सीमा प्रणाली को किन्हीं अंशों तक समूचे गोण्डवाना में संशोधित कर लिया था और वह कालान्तर में आज की गढ़ प्रणाली के रूप में उन राजपूतों के प्रभाव से विकसित हुई, जो गोंड क्षेत्र में सैनिक अथवा भूमिस्वामियों के रूप में स्थायी रूप से रहने लग गये थे। हिन्दुओं के सांस्कृतिक प्रभाव से हिन्दू समाज के निचले स्तर में ही मान्यता मिल गयी।[2]

सर्वे के दौरान मेरी मुलाकात श्री बी.एन. त्रिपाठी ग्राम सभा कोल्हुआ माफी से हुई, जिनका कहना था कि राज्य सरकारों द्वारा आवास, सड़क, पानी, बिजली, प्राथमिक शिक्षा आदि की समस्याओं को दूर किया गया है, लेकिन इनकी आर्थिक समस्या आज भी बनी हुई है। शिक्षा आज भी नही है, केवल प्राथमिक तक ही शिक्षा मिल पाती है। शिक्षा और राजनीति के प्रति इनकी उदासीनता इनके कमजोर होने का मुख्य कारण है। नौकरी भी नही, व्यवसाय भी नहीं, केवल मजदूरी ही सहारा हैं कोल्हुआ माफी के गोंड जाति की संस्कृति देखी जाय तो गैर समुदायों की तरह इनकी संस्कृति का भी लोप होता जा रहा है। आधुनिकीकरण के प्रभाव से ये भी नही बच पाये हैं। खान–पान वेश–भूषा, रीति–रिवाज एवं प्रथा आदि में बहुत कुछ

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

परिवर्तन हुआ है। आम लोगों की तरह इनका खान–पान है, राज्य सरकार द्वारा राशन मिल जाता है। इनकी वेश–भूशा से यही प्रतीत होता है कि आज भी बदहाली का जीवन जी रहे हैं। मदिरा सेवन इनकी परम्परा में आज भी वर्तमान है। 70 प्रतिशत लोगा मध्यपान के शिकार हैं। एक तो इनकी आर्थिक दशा कमजोर है, जो कुछ कमाते हैं, उसका अधिकांश भाग शराब में नष्ट कर देते हैं। आधुनिक युग में एक विभाजन रेखा इनके और गैर जनजातीय समुदायों के बीच है। किसी समय में शराब भी इनके आय का स्त्रोत हुआ करता था।

"निहित स्वार्थों के द्वारा आदिवासियों की कुछ सामाजिक परम्पराओं का भी व्यवस्थित रूप से शोषण के लिए उपयोग किया गया है। उदाहरण के लिए मद्य पान आदिवासी के सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। एक मुद्राविहीन अर्थव्यवस्था में मद्यपान व्यक्ति पर बोझ नही था। वह सामाजिक रूढ़ि का एक अंग था। ग्राम का ही एक व्यक्ति जिसे सलाना पारिश्रमिक के रूप में कुछ अनाज दे दिया जाता था। सामाजिक अवसरों पर मद्य बनाने का काम करता था और उन अवसरों पर पूरा समाज ही मद्यपान में सहभागी होता था। कोई व्यक्ति मद्यपान से पैसा नही कमाता था। आदिवासी क्षेत्रों में आसमन की हुयी शराब के प्रवेश और उसके मद्यपान के बाजारीकरण एक निहित स्वार्थ को मंच पर ला खड़ा किया, जिसका हित इसी में है कि आदिवासी अधिकाधिक मद्यपान करें।[3]

आज भी ये अधिकांश मांशाहारी हैं। सुअर, नील गाय, खरगोश, हिरन एवं सही आदि का मांस खाते हैं। सबसे पहले एक समूह में सब एकत्र हो जाते हैं, लकड़ी का अलाव जलाकर इस पर मरे हुए जानवर को मसाला आदि लगाकर रख देते हैं, और मदिरा के साथ इसका सेवन करते हैं। इस तरह यह उत्सव रूप में मांश खाते हैं। यह इनकी संस्कृति है। आधुनिकता का प्रभाव कितना भी हुआ हो लेकिन इनके यहाँ इसका प्रभाव नहीं के बराबर है। इस बस्ती की आशा, फूलाबाई, केशकली, नेताबाई एवं रविता आदि से मिलकर महत्वपूर्ण जानकारियाँ ली गयीं। शिक्षा के अभाव के बावजूद इनमें जनसंख्या नियंत्रण है क्योंकि इनके दो या तीन से अधिक संतान नहीं हैं। इनका पहनावा साधारण किस्म का है, औरतें साड़ी, लड़कियाँ सरवालर, पैजामा एवं पुरुष वर्ग साधारणतः पैंट एवं शर्ट पहनता है। यहाँ पर धोती कुर्ता किसी को पहने नहीं देखा गया। इनके पहनावें से एक बात यह झलक रही थी कि आज भी इनका शोषण है, भले ही हम आधुनिकता की दौर से गुजर रहे हैं।

महिलाओं की स्थिति आज भी दयनीय है। इस ग्राम की महिलाएं अनेकानेक समस्याओं से जूझ रही हैं। "मद्यपान इनकी संस्कृति रही हैं, ये महिलाए महुआ की शराब घर पर ही बनाते है तथा बेंचते भी हैं। यह इनकी आमदनी का एक जरिया हैं, परन्तु वर्तमान समय मे नशें की समस्या बढती जा रही है। इनके अलावा जनजातियों मे भी गुटखा, तम्बाकू, शराब आदि का सेवन बढ़ता जा रहा है। इसके अलावा जनजातीय संस्कृति मे मद्यपान की प्रकृति इस व्यसन को और अधिक बढ़ावा दे रही है तथा इन महिलाओं की कम आमदनी मे भी इन व्यसनों के प्रयोग करने के कारण इनकी दरिद्रता व निर्धनता बढ़ती जा रही है।[4]

लगभग 9 बजे प्रातः हम लोग कोल्हुआ माफी से पूर्व दिशा की ओर लगभग 8 किमी. दूर डढवामानपुर के गोबरी गोवर्धनपुर बस्ती में पहुंचे। जो थाना फतेहगुज जनपद–बांदा में स्थित है। यह मवासी अनुसूचित जाति की बस्ती है। इनकी भी गणना उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति एवं मध्य प्रदेश में जनजाति में की जाती है। यह बस्ती लगभग 70–75 घरों की है। जिसमें एक भी मकान पक्का नही है। लकड़ी, बांस एवं अरहर की टट्टी हर एक कच्चे मकान के आगे लगी है। सड़क, पानी एवं बिजली की व्यवस्था सामान्य है। यहां के नौजवान जीविकोपार्जन हेतु सुदूर नगरों को पलायन कर चुके हैं। केवल बच्चे महिलायें ही गांव में रहते हैं। इस बस्ती में एक बारात घर एवं प्राथमिक विद्यालय है, जो बस्ती से बहुत दूर है। शिक्षा की स्थिति यह है कि यहां के लोग केवल पांचवीं पास हैं। गेहूँ, अरहर, सब्जी आदि की खेती करते हैं, प्रत्येक घरों के सामने सूखी लकड़ी का गट्ठर एकत्र किया गया है, जिसे बाजार में बेंचकर अपना जीविकोपार्जन करते हैं। इनके पास भूमि नहीं है, ये बटाई की खेती करते हैं। एक आश्चर्यचकित करने वाली घटना यह है कि एक महिला सुन्दरी देवी पत्नी स्व0रामसिया जो अंधी है, उसका एक पोता है जो बाहर रहता है, अंधी दादी अपना गुजर बसर बहुत मुश्किल से करती है। मजदूरी के बारे में पूंछा गया नरेगा मजदूरी 8 घंटें करने पर 204 रुपये प्रति व्यक्ति मिलता है। वह भी सरकारी नियमानुसार अधिक से अधिक 100 दिनों तक ही मिलता है। ये मजदूर बाकी दिनों में कहाँ जायें।[5]

स्वास्थ्य के लिए सरकारी अस्पताल, जड़ी–बूटी, झाड़–फूंक आदि का उपयोग किया जाता है। इस गांव में लगभग 50 शौचालन मिले जो खण्डहर पड़े हुए हैं। महुआ बीनकर बेंचना इनका मुख्य व्यवसाय है। औरतें भी खुटखा, तम्बाकू का सेवन करती हैं। औरतों और बच्चों के स्वास्थ्य एवं उसकी वेशभूसा से इनकी बदहाली एवं आर्थिक तंगी स्पष्ट झलकती है। बांदा जनपद के होने के कारण इनकी भाषा बुंन्देली है। राज मिस्त्री,बढ़ई गिरी एवं लोहारी का काम देखा गया एक बात यह देखने में आयी कि गैर समुदाय के किसी न किसी व्यक्ति का इन पर प्रभाव है। ये उनकी खेती करते उनके आश्रित रहते हैं और

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

उनका शोषण भी होता है। यहाँ पानी का स्तर बहुत नीचे है, कृषि कि लिए पानी बहुत मुस्किल से मिलता है। गोंड जाति की तरह ये लोग भी मांशाहारी एवं शाकाहारी हैं। खान–पान साधारण किस्म का है, पैसे मिलने पर कभी कभार मांस खा लेते हैं। आज भी इनकी आवश्यक मूलभूत आवश्यकताएं पूरी नही हो पा रही है। चिकित्सा, शिक्षा के क्षेत्र मे कोसों दूर है। आर्थिक विपन्नता के साथ गैर समुदायों द्वारा इनका शोषण आज भी हो रहा है। सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं जैसे आवास, राशन, चिकित्सा, शिक्षा, बिजली एवं पानी राजनीतिक प्रतिनिधित्व एक छलावा लग रहा है। सर्वेक्षण के दौरान आदिवासी 5वीं से अधिक शिक्षित नही मिला। अधिकांश के पास भूमि नही। चिकित्सा की व्यवस्था नही। आर्थिक आधार नही। ये अपनी परंपरागत विरासत को भूलते जा रहे है। जब ये वनों पर आश्रित थे, वनों एवं प्राकृतिक सम्पतियों पर सरकार का अतिक्रमण नही था। उस समय ये बेहतर थे स्वतंत्र थे। आर्थिक रूप से सम्पन थे, लेकिन आज ये स्वतंत्र भारत के गुलाम का जीवन जी रहे हैं। राजनीतिक जागरूकता केवल कागजों मे है, लेकिन आधिपत्य गैर समुदायों का है। गैर समुदाय इनके प्रति अपनी मानसिकता नही बदल पाये हैं। इनके लिए ये आज भी जंगली है। इन लोगों को अधिकार नही दिया जा रहा है। इन पर एहसान किया जा रहा है। इनकी समस्याओं का समाधान समाज की विचार धारा मे है। गैर समुदाय इनके प्रति अपनी नकारात्मक सोंच को बदलें, क्योंकि ये भी इसी समाज के अंग हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तिवारी डॉ0 शिवकुमार एवं शर्मा श्री कमल–म0प्र0 की जनजातियाँ समाज एवं व्यवस्था, म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी–2009, पृ0सं0–85.
2. शर्मा डॉ0 ब्रह्मदेव, आदिवासी विकास एक सैद्धान्तिक विवेचन, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, संस्करण षष्ठ 2012 पृ.स.–83.
3. तिवारी डॉ0 शिवकुमार एवं शर्मा श्री कमल–म0प्र0 की जनजातियाँ समाज एवं व्यवस्था, म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी–2009, पृ0सं0–49.
4. researchjournal.vjhssonline.com
5. स्थानीय व्यक्ति–श्री बी0एन0 त्रिपाठी, आशा, फूलाबाई, केशकली, सुन्दरी, नेताबाई, रविता आदि।

*****